# हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक ‘*भाषा भारती*’ में महिलाओं के प्रतिनिधित्व का अध्ययन

पीताम्बरा साहू*
राघवेन्द्र कुमार हुरमाड़े**

*बालक के विकास में औपचारिक शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। विद्यालय, विद्यार्थी, अध्यापक, पाठ्यचर्या आदि औपचारिक शिक्षा के अभिन्न अंग होते हैं। विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकें अधिगम स्रोत के एक माध्यम के रूप में कार्य करती हैं। शिक्षण कार्य में हिंदी पाठ्यपुस्तकों का बड़ा महत्व है, विशेषतः भाषा शिक्षण में। हिंदी की पाठ्यपुस्तक में गद्य, पद्य, कहानी, कविता, एकांकी आदि के माध्यम से देश के धार्मिक, सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक दृश्यों के चित्रण के साथ-साथ व्याकरण का ज्ञान भी प्रदान किया जाता है। इन्हीं पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति का भी चित्रण किया जाता है। वैदिक कालीन साहित्य में महिलाओं को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था, महिलाओं की शिक्षा-दीक्षा की उत्तम व्यवस्था थी। महिलाएँ राजनैतिक, सामाजिक तथा प्रशासनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। इसी संदर्भ में यह शोध अध्ययन मध्य प्रदेश की कक्षा 7वीं की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक भाषा भारती में महिलाओं के व्यक्तित्व, सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक स्थिति के चित्रण पर आधारित है।*

## परिचय

बालक के विकास में औपचारिक शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। विद्यालय, विद्यार्थी, अध्यापक, पाठ्यचर्या आदि औपचारिक शिक्षा के अभिन्न अंग होते हैं। पाठ्यचर्या के अंतर्गत समस्त वांछित गतिविधियाँ आती हैं, जो विद्यालय में संचालित होती हैं। पाठ्यचर्या की पूर्ति हेतु अध्ययन मण्डल/पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति द्वारा विभिन्न पाठ्यपुस्तकें अनुशंसित की जाती हैं, जिनसे अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं मनोगत्यात्मक उद्देश्यों की पूर्ति करेंगी। विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकें अधिगम स्रोत के एक माध्यम के रूप में कार्य करती हैं। उन्हें कक्षा के निर्धारित पाठ्यक्रम का ज्ञान देती हैं तथा उन्हें यह भी बताती हैं कि उन्होंने कितना कार्य समाप्त कर लिया है और कितना करना शेष है। पाठ्यपुस्तक

* *एम.एड. विद्यार्थी*, शिक्षा अध्ययनशाला (IASE), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश 452 001
** *सहायक प्राध्यापक*, शिक्षा अध्ययनशाला (IASE), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश 452 001

के अर्थ को सुस्पष्ट करने के लिए कुछ प्रमुख विद्वानों के कथनों को प्रस्तुत करना यहाँ पर समीचीन प्रतीत हो रहा है—

हेरोलिकर के अनुसार, "पाठ्यपुस्तक ज्ञान, आदतों, भावनाओं, क्रियाओं तथा प्रवृत्तियों का संपूर्ण योग है।"

बेकन के अनुसार, "पाठ्यपुस्तक कक्षा प्रयोग के लिए विशेषज्ञों द्वारा सावधानी से तैयार की जाती है, यह शिक्षक युक्तियों से भी सुसज्जित होती है।"

पाठ्यचर्या को ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तकों के विकास का इतिहास सोलहवीं शताब्दी से प्रारंभ होता है। सर्वप्रथम कमेनियस (1592–1670) ने भाषा-शिक्षण की पाठ्यपुस्तक लिखी थी। इसके बाद पाठ्यपुस्तकों के महत्व को देखते हुए इसका प्रचलन बढ़ता गया तथा अनेक शिक्षाविदों एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा पाठ्यपुस्तकें लिखी जाने लगीं। शिक्षण कार्य में हिंदी पाठ्यपुस्तकों का बड़ा महत्व है, विशेषतः भाषा शिक्षण में। हिंदी की पाठ्यपुस्तक के माध्यम से विद्यार्थी के वाचन कौशल और स्वाध्यायशील प्रवृत्ति को प्रशिक्षित करने की चेष्टा की जाती है। इन्हीं पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति का भी चित्रण किया जाता है। वैदिक कालीन साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतवर्ष के समाज में महिलाओं को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। महिलाओं की शिक्षा-दीक्षा की उत्तम व्यवस्था थी। महिलाएँ राजनैतिक, सामाजिक तथा प्रशासनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं।

## औचित्य

बालक पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से भी शिक्षा ग्रहण करता है और पाठ्यपुस्तक उसे बहुत कुछ सिखाती है। हिंदी की पाठ्यपुस्तक में गद्य, पद्य, कहानी, कविता, एकांकी आदि के माध्यम से देश के धार्मिक, सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक दृश्यों के चित्रण के साथ-साथ व्याकरण का ज्ञान भी प्रदान किया जाता है। पाठ्यपुस्तक के माध्यम से बहुत सारी अवधारणाएँ सहज ही हमारे मन-मस्तिष्क में पैठ कर जाती हैं।

महिला एवं पुरुष एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है। महिला जन्म देने वाली माँ है और वही बच्चे की पहली गुरु भी होती है। वह बालक के संस्कारों को निर्धारित करती है और समुचित वातावरण, सीख, लालन-पालन और स्नेह देकर सामाजिक तथा मानवीय विकास करती है। एक गृहस्थ जीवन में महिला माता, गृहणी तथा पत्नी तीनों के रूपों में कर्त्तव्य पालन करती है। इन समस्त विशेषताओं के बावजूद समाज द्वारा महिलाओं को हमेशा पुरुषों की तुलना में कमतर ही आँका गया है। प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह राजनैतिक, सामाजिक या प्रशासनिक क्षेत्र हो या चाहे शैक्षिक क्षेत्र हो, उनकी उपेक्षा की जाती रही है। राष्ट्र और समाज के समुचित विकास हेतु यह आवश्यक है कि, पुरुषों और महिलाओं, दोनों को सभी क्षेत्रों में कार्य के समान अवसर प्राप्त हों, साथ ही शिक्षा के प्रति महिलाओं की रुचि बढ़ाने हेतु हर स्तर पर प्रयास हों। पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से भी महिला वर्ग की शिक्षा के प्रति रुचि

उत्पन्न की जा सकती है। चूँकि पाठ्यपुस्तकें शिक्षा प्रक्रिया में ज्ञान प्राप्ति का सहज सुलभ स्रोत हैं। अतः यदि हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकों की विषय-वस्तु में महिलाओं के सामाजिक जीवन, संस्कृति, सभ्यता और समस्याओं का पर्याप्त वर्णन किया जाए तो निश्चित रूप से यह महिलाओं को शिक्षा के प्रति आकर्षित करने में महत्वपूर्ण कदम होगा। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—2005 में भी कहा गया है कि किसी भी ऐतिहासिक और समकालीन विषय पर चर्चा के दौरान जेंडर संबंधी सरोकारों को संबोधित करना ज़रूरी है। इसके लिए सामाजिक विज्ञान एवं अन्य विषयों में प्रचलित पितृसत्तात्मक मान्यताओं में बदलाव की ज़रूरत है।

अतः हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषणात्मक अध्ययन आवश्यक है, ताकि विदित हो सके कि— क्या वास्तव में पाठ्यपुस्तकें महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं? यदि करती हैं तो किस सीमा तक? तथा महिला वर्ग की सामाजिक स्थिति के किन-किन पहलुओं का प्रतिनिधित्व करती हैं? आदि जानने हेतु इस शोध अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

संबंधित साहित्य के अध्ययन से विदित होता है कि केकरे (1979) ने बाल साहित्य पाठ्यपुस्तकों में प्रस्तुत विषयवस्तुओं का तुलनात्मक अध्ययन पर, गौर (1980) ने आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास एवं विशेष सुविधाओं और समाज के प्रति उनके व्यवहार के अध्ययन पर, शर्मा (1985) ने प्राथमिक स्तर पर विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं भाषा की पाठ्यपुस्तकों में उपयोग की गई भाषा की व्यापकता के अध्ययन पर, भार्गव (1988) ने राजस्थान में अनुसूचित एवं अनुसूचित जनजाति की शैक्षिक सुविधाओं के अध्ययन पर, पिपरइया (1989) ने माध्यमिक स्तर की भाषा एवं सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की स्थिति—एक विश्लेषणात्मक अध्ययन पर, एक्का (1990) ने ओडिशा में स्वतंत्रता उपरांत आदिवासी शिक्षा के विकास के अध्ययन पर, खाण्डेकर (1991) ने नागपुर में महाविद्यालयों में स्नातक स्तर की हिंदी पाठ्यपुस्तकों में शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन पर, शर्मा (2000) ने इंदौर शहर के निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्यपुस्तक निर्धारण प्रणाली के अध्ययन पर, सिंह (2002) ने भाषा एवं सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की स्थिति के विश्लेषणात्मक अध्ययन पर, बोबड़े (2005) ने महिला शिक्षा के विकास में एक समाज सेवी संस्था की भूमिका के अध्ययन पर, एस्के (2007) ने मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित हिंदी पाठ्यपुस्तकों में मूल्योंन्मुखता के अध्ययन पर और घौड़ (2012) ने महिलाओं के कानूनी अधिकार, घरेलू हिंसा, उत्तराधिकार व महिलाओं का अशिष्ट रूपण पर विकसित अनुदेशनात्मक आव्यूह की प्रभाविकता का बी.एड. विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन पर, अध्ययन किया।

उपर्युक्त शोध अध्ययनों के विश्लेषण से विदित होता है कि पाठ्यपुस्तक पर आधारित समस्याओं पर कई शोध अध्ययन हुए हैं, परंतु "मध्य प्रदेश

की कक्षा सातवीं की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में महिलाओं के प्रतिनिधित्व का अध्ययन" पर कोई शोध अध्ययन नहीं हुआ। अतः मध्य प्रदेश की कक्षा सातवीं की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में महिलाओं के प्रतिनिधित्व का अध्ययन पर कार्य करने की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

## समस्या कथन

इस शोध की समस्या थी—मध्यप्रदेश की कक्षा सातवीं की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में महिलाओं के प्रतिनिधित्व का अध्ययन

## उद्देश्य

इस शोध के निम्न उद्देश्य थे —

1. कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक में महिलाओं के व्यक्तित्व के चित्रण का अध्ययन करना।
2. कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के चित्रण का अध्ययन करना।
3. कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति के चित्रण का अध्ययन करना।

## न्यादर्श

इस शोध में न्यादर्श के रूप में राज्य शिक्षा केंद्र मध्य प्रदेश द्वारा प्रकाशित कक्षा सातवीं की वर्ष 2013–14 की हिंदी पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* का चयन सोद्देश्यपूर्ण न्यादर्श तकनीक से किया गया।

## प्रदत्त संकलन

इस संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* का गहन अध्ययन किया गया तथा पाठ्यपुस्तक में महिलाओं के व्यक्तित्व, सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक स्थिति से संबंधित जानकारी को अलग-अलग वर्गीकृत कर विश्लेषित किया गया।

## प्रदत्त विश्लेषण

इस शोध में प्रदत्तों का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत एवं विषय-वस्तु विश्लेषण द्वारा किया गया।

## कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में महिलाओं के व्यक्तित्व चित्रण का अध्ययन

इस शोध का प्रथम उद्देश्य "कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक में महिलाओं के व्यक्तित्व के चित्रण का अध्ययन करना'' था। यहाँ पर महिलाओं के व्यक्तित्व का निर्धारण पाठ में उनके व्यवहार, ज्ञान तथा उनकी भूमिका के आधार पर किया गया। जिसके संबंध में *भाषा भारती* की पाठ्यपुस्तक का अध्यायवार विश्लेषण करने पर विदित होता है कि, *भाषा भारती* में कुल 27 अध्यायों में से 13 अध्याय महिलाओं पर आधारित हैं। जिसमें महिलाओं पर आधारित पाठ एक 'दादी की घड़ी' के अंतर्गत दादी, शीलू की माँ और शीलू तीन महिला पात्र थे, जिसमें दादी और शीलू की माँ का प्रभावशाली व्यक्तित्व था और शीलू का व्यक्तित्व सामान्य प्रभाव का था।

पाठ दो 'राखी का मूल्य' में कर्मावती व जवाहरबाई दो महिला पात्रों के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। जिसमें कर्मावती का व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है तथा जवाहरबाई का व्यक्तित्व कम प्रभावशाली चित्रित किया गया है।

पाठ तीन 'हींगवाला' में सावित्री और उनकी पुत्री के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया। जिसमें सावित्री का व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है तथा बेटी का व्यक्तित्व कम प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है।

पाठ चार 'मध्यप्रदेश के उद्यान' में संध्या, कुसुम और फरीदा तीन महिला पात्रों का चित्रण किया गया। जिसमें संध्या का व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है तथा कुसुम और फरीदा का व्यक्तित्व मध्यम प्रभावशाली चित्रित किया गया है।

पाठ पाँच 'वात्सल्य के पद' में यशोदा एक महिला पात्र के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। जिसमें यशोदा का व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है।

पाठ छह 'नींव का पत्थर' में रानी लक्ष्मीबाई, जूही, मुन्दर तीन महिला पात्रों के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। जिसमें रानी लक्ष्मीबाई का व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है। जूही और मुन्दर का व्यक्तित्व मध्यम प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है।

पाठ सात 'छोटा जादूगर' में जादूगर की माँ और कर्नल की पत्नी दो महिला पात्रों के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है, जिसमें कर्नल की पत्नी का व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है तथा जादूगर की माँ का व्यक्तित्व मध्यम रूप से चित्रित किया गया है।

पाठ आठ 'नरवदी' में आदिवासी लड़की नरवदी के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। वहाँ नरवदी के व्यक्तित्व का प्रभावशाली रूप से चित्रण किया गया है।

पाठ नौ 'और भी दूँ' में भारत माता के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। जिसमें भारत माता के व्यक्तित्व को प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है।

पाठ दस 'लोकमाता अहिल्याबाई' में अहिल्याबाई और उनकी पुत्री दो महिला पात्रों के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। जिसमें अहिल्याबाई और उनकी पुत्री का व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है।

पाठ ग्यारह 'ज्ञानदा की डायरी' के अंतर्गत ज्ञानदा, मालती, सुजाता, सरोज चार महिलाओं के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। वहाँ ज्ञानदा का व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है। साथ ही मालती, सुजाता और सरोज तीनों महिलाओं का व्यक्तित्व भी प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है।

पाठ बारह 'माँ कह एक कहानी' के अंतर्गत बच्चे की माँ के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। वहाँ बच्चे की माँ का व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है।

पाठ तेरह 'कर्त्तव्य पालन' में दो महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। जिसमें दोनों का व्यक्तित्व मध्यम स्तर का चित्रित किया गया है।

अतः सारांश रूप में कहा जा सकता है कि कक्षा सातवीं में महिला पात्रों से संबंधित 13 पाठों में कुल 27 महिला पात्रों का चित्रण किया गया है।

जिसमें से 17 महिला पात्रों के व्यक्तित्व को उच्च प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में, आठ महिला पात्रों के व्यक्तित्व को औसत प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में, दो महिला पात्रों के व्यक्तित्व को निम्न प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत महिला पात्रों में से लगभग 63 प्रतिशत महिला पात्रों के व्यक्तित्व को उच्च प्रभावशाली, लगभग 30 प्रतिशत महिला पात्रों को मध्यम प्रभावशाली व्यक्तित्व और लगभग 07 प्रतिशत महिला पात्रों को निम्न प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली महिलाओं के रूप में चित्रित किया गया है अर्थात् लगभग सभी महिला पात्रों के व्यक्तित्व को औसत एवं उच्च प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली महिलाओं के रूप में चित्रित किया गया है।

## कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के चित्रण का अध्ययन

इस शोध का द्वितीय उद्देश्य "कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के चित्रण का अध्ययन करना" था। यहाँ पर महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का निर्धारण पाठ में उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के साथ-साथ पाठ में उनके व्यवहार और उनकी भूमिका के आधार पर किया गया। *भाषा भारती* की पाठ्यपुस्तक का अध्यायवार विश्लेषण करने पर विदित होता है कि, *भाषा भारती* में कुल 27 पाठों में से 13 पाठ महिलाओं पर आधारित हैं। जिसमें महिला पर आधारित पाठ 'दादी की घड़ी' के अंतर्गत तीन महिला पात्र थीं। वहाँ दादी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च स्तर पर चित्रित की गई और शीलू तथा शीलू की माँ की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मध्यम स्तर पर चित्रित की गई।

पाठ दो 'राखी का मूल्य' के अंतर्गत कर्मवती और जवाहरबाई दो महिला पात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का चित्रण किया गया है। वहाँ कर्मवती की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च स्तर पर चित्रित की गई है और जवाहरबाई की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मध्यम स्तर पर चित्रित की गई है।

पाठ तीन 'हींगवाला' में सावित्री और उनकी पुत्री दो महिला पात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का चित्रण किया गया है। जहाँ सावित्री और उसकी पुत्री की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मध्यम दिखाई गई है।

पाठ चार 'मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान' के अंतर्गत संध्या, फरीदा और कुसुम तीन महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। जिसमें संध्या की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च, फरीदा और कुसुम की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मध्यम स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ पाँच 'वात्सल्य के पद' में एक महिला पात्र का चित्रण किया गया है। जिसमें यशोदा की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च स्तर पर चित्रित की गई है।

पाठ छह 'नींव का पत्थर' में रानी लक्ष्मीबाई, जूही, मुन्दर तीन महिला पात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का चित्रण किया गया है। जिसमें लक्ष्मीबाई की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च स्तर

की, जूही और मुन्दर की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मध्यम स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ सात 'छोटा जादूगर' में दो महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। जिसमें कर्नल की पत्नी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च स्तर की और जादूगर की माँ की सामाजिक-आर्थिक स्थिति निम्न स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ आठ 'नरवदी' में एक महिला पात्र का चित्रण किया गया। जिसमें नरवदी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति निम्न स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ नौ 'और भी दूँ' में भारत माता का चित्रण किया गया है। जिसमें भारत माता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ दस 'लोकमाता अहिल्याबाई' में अहिल्याबाई और अहिल्याबाई की पुत्री की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का चित्रण किया गया है। जिसमें लोकमाता अहिल्याबाई और उनकी पुत्री की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ ग्यारह 'ज्ञानदा की डायरी' में ज्ञानदा, मालती, सुजाता और सरोज चार महिलाओं का चित्रण किया गया है। जिसमें ज्ञानदा की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च स्तर की, मालती, सुजाता और सरोज की सामाजिक-आर्थिक स्थिति निम्न स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ बारह 'माँ कह एक कहानी' पाठ में एक महिला पात्र का चित्रण किया गया है। जिसमें बच्चों की माँ की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मध्यम स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ तेरह "कर्त्तव्य पालन" में दो महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। दोनों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति निम्न स्तर की चित्रित की गई है।

अतः सारांश रूप में कहा जा सकता है कि कुल 27 पात्रों में से 10 महिला पात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च, 10 महिला पात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मध्यम और सात महिला पात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति निम्न स्तर की चित्रित की गई है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत महिला पात्रों में से लगभग 37 प्रतिशत महिला पात्रों को उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति, लगभग 37 प्रतिशत महिला पात्रों को मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति और लगभग 26 प्रतिशत महिला पात्रों को निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाली महिलाओं के रूप में चित्रित किया गया है अर्थात् लगभग तीन चौथाई (75%) महिला पात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को औसत तथा उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाली महिलाओं के रूप में चित्रित किया गया है।

## कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में पाठ्यपुस्तक में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति के चित्रण का अध्ययन

इस शोध का तृतीय उद्देश्य कक्षा सातवीं की हिंदी की *भाषा भारती* की पाठ्यपुस्तक में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना था। यहाँ पर महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का निर्धारण पाठ में उनकी शैक्षणिक योग्यता के साथ-साथ पाठ में उनके व्यवहार, ज्ञान, अंतर्क्रिया और उनकी भूमिका के आधार पर किया गया। पाठ्यपुस्तक

*भाषा भारती* के पाठों का विश्लेषण करने पर पाया गया कि *भाषा भारती* में कुल 27 अध्यायों में से 13 अध्याय महिलाओं पर आधारित हैं। जिनमें महिला पर आधारित पाठ एक 'दादी की घड़ी' में तीन महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। जिसमें दादी की शैक्षिक स्थिति निम्न स्तर की है। शीलू की माँ की शैक्षिक स्थिति मध्यम स्तर की और शीलू की शैक्षिक स्थिति उच्च स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ दो 'राखी का मूल्य' जिसमें दो महिलाओं का चित्रण किया गया है। कर्मवती का शैक्षिक स्तर उच्च और जवाहरबाई का शैक्षिक स्तर मध्यम चित्रित किया गया है।

पाठ तीन 'हींगवाला' जिसमें सावित्री और सावित्री की बेटी दो महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। सावित्री की शैक्षिक स्थिति मध्यम और सावित्री की पुत्री की शैक्षिक स्थिति निम्न चित्रित की गई है।

पाठ चार 'मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय उद्यान' पाठ में संध्या, फरीदा और कुसुम तीन महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। जिसमें संध्या की शैक्षिक स्थिति उच्च स्तर की और फरीदा तथा कुसुम की शैक्षिक स्थिति मध्यम स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ पाँच 'वात्सल्य के पद' में एक महिला पात्र यशोदा का चित्रण किया गया है। जिसमें यशोदा की शैक्षिक स्थिति मध्यम स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ छह 'नींव का पत्थर' में तीन महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। जिसमें रानी लक्ष्मीबाई की शैक्षिक स्थिति उच्च स्तर की और जूही तथा मुन्दर की शैक्षिक स्थिति मध्यम स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ सात 'छोटा जादूगर' में दो महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। पाठ में कर्नल की पत्नी की शैक्षिक स्थिति उच्च स्तर की तथा जादूगर की माँ की शैक्षिक स्थिति निम्न स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ आठ 'नरवदी' में एक महिला पात्र का चित्रण किया गया है। जिसमें नरवदी की शैक्षिक स्थिति मध्यम स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ नौ 'और भी दूँ' में एक महिला पात्र का चित्रण किया गया है। जिसमें भारत माता की शैक्षिक स्थिति उच्च स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ दस 'लोकमाता अहिल्याबाई' में दो महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। जिसमें अहिल्याबाई तथा उनकी बेटी की शैक्षिक स्थिति उच्च स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ ग्यारह 'ज्ञानदा की डायरी' में चार महिला पात्रों का चित्रण किया गया है। जिसमें ज्ञानदा की शैक्षिक स्थिति उच्च तथा मालती, सुजाता और सरोज की शैक्षिक स्थिति मध्यम स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ बारह 'माँ कह एक कहानी' में बच्चे की माँ का चित्रण किया गया, जिसमें बच्चे की माँ की शैक्षिक स्थिति मध्यम स्तर की चित्रित की गई है।

पाठ तेरह 'कर्त्तव्य पालन' में दो महिला पात्रों का चित्रण किया गया है, दोनों की शैक्षिक स्थिति निम्न स्तर की चित्रित की गई है।

अतः सारांश रूप में कहा जा सकता है कि कुल 27 महिला पात्रों में से 10 महिला पात्रों की उच्च शैक्षिक स्थिति, 12 महिला पात्रों की मध्यम शैक्षिक स्थिति तथा पाँच महिला पात्रों की निम्न शैक्षिक

स्थिति प्रस्तुत की गई है। इससे स्पष्ट होता है कि लगभग 37 प्रतिशत महिला पात्रों की उच्च शैक्षिक स्थिति, लगभग 44 प्रतिशत महिला पात्रों की मध्यम शैक्षिक स्थिति तथा 19 प्रतिशत महिला पात्रों की निम्न शैक्षिक स्थिति वाली महिलाओं के रूप में चित्रित किया गया है अर्थात् अधिकांशतः महिला पात्रों को औसत और उच्च शैक्षिक स्तर वाली महिलाओं के रूप में चित्रित किया गया है।

## निष्कर्ष

इस शोध के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए—

1. कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में कुल पाठों की संख्या 24 है, जिनमें से 13 अध्यायों में 27 महिला पात्रों के व्यक्तित्व, सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक स्थिति का चित्रण किया गया है।
2. कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में लगभग सभी महिला पात्रों के व्यक्तित्व को औसत और उच्च प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली महिलाओं के रूप में चित्रित किया गया है। जबकि कुछ ही अध्याय ऐसे हैं, जिनमें कि महिलाओं के व्यक्तित्व को कम प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है।
3. कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में महिलाओं के पात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति लगभग सभी अध्यायों/पाठों में एक समान थी। लगभग तीन चौथाई (75%) महिला पात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को औसत तथा उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाली महिलाओं के रूप में चित्रित किया गया है। जबकि कुछ को निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के रूप में चित्रित किया गया है।
4. कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* के अधिकांश अध्यायों में एक महिला पात्र मध्यम शैक्षिक स्थिति का पाया गया। जबकि कुछ अध्यायों में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति को उच्च शैक्षिक स्थिति और कुछ में निम्न शैक्षिक स्थिति का चित्रण किया गया है।

## शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध के निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ हो सकते हैं—

1. कक्षा सातवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* के कुल 24 पाठों में से 13 पाठों में 27 महिला पात्रों का ही चित्रण किया गया है। इस अध्ययन के आधार पर पाठ्यचर्या निर्धारण समिति द्वारा पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में महिलाओं से संबंधित पाठों की संख्या तथा उनमें महिला पात्रों की संख्या में वृद्धि की जा सकती है।
2. कक्षा सातवीं के हिंदी की पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में महिला पात्रों के व्यक्तित्व, सामाजिक-आर्थिक स्थिति व शैक्षिक स्थिति का चित्रण अधिकांशतः उच्च तथा औसत स्तर के अंतर्गत किया गया है। इस अध्ययन के आधार पर विद्यार्थियों कि विभिन्न समस्याओं का सामना करने, आगे अध्ययन करने तथा समाज में पहचान बनाने हेतु प्रोत्साहित करने में सहायक हो सकती है। विद्यार्थियों को भी उक्त महिला पात्रों की जानकारी प्रदान कर उनके मन में महिलाओं के प्रति आदर व सम्मान के भाव उत्पन्न किए जा सकते हैं।
3. *भाषा भारती* के केवल 13 पाठों में कुल 27 महिला पात्रों का ही चित्रण किया गया है। जिसमें उच्च व्यक्तित्व, सामाजिक-आर्थिक

स्थिति व शैक्षिक स्थिति वाली महिला पात्रों की तुलना में निम्न व्यक्तित्व, सामाजिक-आर्थिक स्थिति व शैक्षिक स्थिति वाली महिला पात्रों के चित्रण में काफ़ी अंतर पाया गया। पाठ्यपुस्तक *भाषा भारती* में कुछ ही महिला पात्रों का चित्रण वर्तमान भारतीय परिदृश्य एवं दशाओं से संबंधित पाया गया। अतः इस अध्ययन के आधार पर लेखक द्वारा अपने पाठों में महिला पात्रों की संख्या में वृद्धि, महिला पात्रों के सभी स्तरों का समान रूप से चित्रण तथा वर्तमान भारतीय परिदृश्य व दशाओं से संबंधित चित्रण किया जा सकता है।

## संदर्भ


राय,जी. 1993. *शिक्षा एवं भारतीय समाज*. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, राजस्थान.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

———. 2006. *सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन*. वॉल्यूम I. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

———. 2007. *सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन*. वॉल्यूम II. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सिंह, वी. 2002. भाषा एवं सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन. अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध, शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश.